CAREERINDIA

सीनियर सेकेंडरी स्कूल परीक्षा
मार्च 2018

अंक योजना – इतिहास कोड संख्या 07

61/1 ,61/2,61/3

सामान्य निर्देश :

1. अंक योजना मूल्यांकन करने में व्यक्तिपरकता को कम करने हेतु सामान्य दिशा निर्देश प्रदान करती है । अंक योजना में दिए गए उत्तर सुझावात्मक और सांकेतक हैं। यदि परीक्षार्थी अंक योजना में दिए गए उत्तरों से भिन्न उत्तर लिखता है, परन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं तो उसे पूर्ण अंक दिए जाएं।
2. अंक योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही मूल्यांकन किया जाय। मूल्यांकन कार्य अपनी निजी व्याख्या के अनुसार अथवा अन्य किसी सोच के आधार पर नहीं हो। अंक योजना यथावत पालन किया जाए और उसका उपयोग नियमित किया जाए।
3. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हैं तो ऐसे प्रश्न के प्रत्येक उपभाग के उत्तरों पर दाई ओर अंक दिए जाएं। बाद में उपभागों के अंको का योग वाई ओर हाशिए पर लिखकर उसे गोलाकृति किया जाए।
4. यदि प्रश्न का कोई उपभाग नहीं है तो उस पर बाई ओर ही अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए।
5. यदि किसी परीक्षार्थी ने किसी विकल्प प्रश्न का उत्तर लिख दिया है तो जिस प्रश्न में अधिक अंक मिले हैं, उसे रखा जाए और दूसरे को निरस्त किया जाए।

6. उन प्रश्नों के छोड़कर, जिनमें परीक्षार्थियों से ज्ञान–आधारित सूचनाओं की अपेक्षा है, अन्य प्रश्नों में परीक्षार्थियों के उत्तरों का मूल्यांकन करते समय उत्तर में परिलक्षित बोधात्मकता पर विशेष ध्यान दिया जाए। बिना कोई व्याख्या केवल सूचीबद्ध बिन्दुओं को परीक्षार्थियों के ज्ञान का उपयुक्त संकेत न माना जाए।

www.careerindia.com

CAREERINDIA

7. बहुसंख्यक बिन्दुओं की अपेक्षा कम बिन्दु होते हुए भी यदि उनका अच्छी तरह से स्पष्टीकरण दिया गया है तो ऐसे उत्तरों के पक्ष में आंकलन किया जाए।
8. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के साथ संदर्भ हेतु निर्धारित पाठयपुस्तकों की पृष्ठ संख्या दी गई है, ताकि आवश्यकतानुसार परीक्षक इन पृष्ठों का अध्ययन कर, उत्तरों का तथ्यपरक मूल्यांकन कर सकें।
9. मूल्यांकन में सम्पूर्ण अंक पैमाने – 0 से 80 का प्रयोग अपेक्षित है। यदि परीक्षार्थी ने सही उत्तर दिया है तो उसे पूरे अंक देने में तनिक भी संकोच न करें।
10. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझावात्मक मूल्य बिन्दु दिए गए हैं। ये दिशा निर्देश मात्र हैं।ये अपने में पूर्ण उत्तर नहीं हैं। विद्यार्थियों की अपनी–अपनी अभिव्यक्ति हो सकती है। यदि विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति सही है तो तद्नुसार अंक देने हैं।
11. माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार परीक्षार्थी अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की छायाप्रति प्रार्थना पर निर्धारित शुल्क के भुगतान पर प्राप्त कर सकेंगे। सभी परीक्षकों/मुख्य परीक्षकों को एक बार पुनः ध्यान दिलाया जाता है कि वे सुनिश्चित करें कि मूल्यांकन करने समय प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अंक योजना में दिए गए मूल्य बिन्दुओं का कड़ाई से परिपालन किया जाए।
12. सभी मुख्य परीक्षकों/परीक्षकों को निर्दिष्ट किया जाता है कि जब वे उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कर रहे हों, यदि उत्तर को पूर्णतः गलत पाते हैं तो गलत उत्तर के लिए ;गद्ध अंकित करना चाहिए और ृव्श अंक दिया जाना चाहिए।
13. परीक्षक वास्तविक मूल्यांकन से पूर्व 'स्थल मूल्यांकन' के लिए मार्ग दर्शन' में दिए गए मार्ग दर्शनों की जानकारी प्राप्त कर लें।
14. प्रत्येक परीक्षक प्रतिदिन मूल्यांकन स्थल पर पर्याप्त समय जो सामान्यतः 6–7 घन्टे है तक कार्य करके उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें तथा प्रत्येक उत्तर पुस्तिका के मूल्यांकन के लिए 20–25 मिनट का समय लगाएं।

www.careerindia.com

15. प्रत्येक परीक्षक प्रश्न पत्र के प्रत्येक सेट की अंक योजनाओं से स्वयं को अवगत कर लें।

अंक योजना इतिहास 027

कक्षा XII मार्च 2018 61/3

प्रश्न संख्या	मूल्य बिन्दु / संभावित उत्तर	अंक
1	**भारत में मुगल शासन के दौरान ग्रामीण पंचायतों के राजस्व के स्रोत:** (I) पंचायत का खर्चा गांव के उस आम खजानें से चलता था जिसमे हर व्यक्ति अपना योगदान देता था । (II) पंचायतों को जुर्माना लगाने का भी अधिकार था । (III) कृषि कर (IV)काई भी अन्य प्रासंगिक बिन्दु । (किसी एक बिन्दु का स्पष्टीकरण) पृ.सं 202,203,213**शल्प उत्पादन के केद्रों की पहचान के लिए पुरात्तवविद सामान्यत:** (I) कच्चामाल जैसे प्रस्तर पिण्डं पूरे शंख तथा ताबां अयस्क (II) औजार (III) अपूर्ण वस्तुएँ (IV) त्याग दिया गया माल तथा कूड़ा करकट यहां तक कि कूडा करकट शिल्प कार्य के सबसे अच्छे संकेतकों में से एक है । उदाहरण के लिए ,यदि वस्तुओं के निर्माण के लिए शंख अथवा पत्थर को काटा जाता था तो इन पदार्थों के टुकडे कूडे के रूप में उत्पादन के स्थान पर फेंक दिए जाते थे	2

CAREERINDIA

	। (V) पूर्ण वस्तुएं – कभी कभी बडे बेकार टुकडों को छोटे आकार की वस्तुएं बनाने के लिए प्रयोग किया जाता था । छोटे विशिष्ट केन्द्रों के अतिरिक्त मोहनजोदाडों तथा हड़प्पा जैसे बड़े शहरों में भी शिल्प उत्पादन किया जाता था । (किन्ही दो बिन्दुओं का परीक्षण) पृ.सं 11, 12	
2	**1859 में ब्रिटिश द्वारा लागू किए गए परिसीमन कानून का प्रभाव:** (I) ऋणदाता रैयत के बीच हस्ताक्षरित ऋणपत्र केवल तीन वर्षों के लिए मान्य किया गया था । (II)इस कानून का उद्देश्य बहुत समय तक ब्याज को संचित करने से रोकना था । (IIII)ऋणदाता ने इस कानून को घुमाकर अपने पक्ष में कर लिया और रैयत के हर तीसरे साल एक नया बंधपत्र भरवाने लगा । (IV) जब काई नया बांड हस्ताक्षरित होता तो न चुकाई गई शेष राशी अर्थात मूलधन और उस पर उत्पन्न तथा इक्ठ्ठा हुए सम्पूर्ण ब्याज को मूलधन के रूप में दर्ज किया जाता और उस पर नए सिरे से ब्याज लगने लगता (V) जब ऋण चुकाए जाते तो ऋणदाता रैयत को उसकी रसीद देने से इनकार कर देते थे,बंधपत्रों में जाली आकडे. भर लेते थे और किसानों की धन संपदा पर ही कब्जा कर लेते थे। (VI) दस्तावेज और बंधपत्र नयी अत्याचारपूर्ण प्रमाण के प्रतीक बन गए । (VII) किसानों की दुख तकलीफ का कारण वह सब बंधपत्र और दस्तावेजों की व्यवस्था ही थी।	2

www.careerindia.com

	(VIII) किसान लाचार थे क्योकि उन्हे जिन्दा रहनेके लिए ऋण चाहिए थे और ऋण दाता कानूनी दस्तावेजों के बिना ऋण देने के लिए तैयार नहीं थे । (IX) अन्य काई प्रासंगिक बिन्दु। पृ.सं 283 ,284	
3	**शिल्प उत्पादन के केद्रों की पहचान के लिए पुरात्तवविद सामान्यतः** (I) कच्चामाल जैसे प्रस्तर पिण्डं पूरे शंख तथा ताबां अयस्क (II) औजार (III) अपूर्ण वस्तुएँ (IV) त्याग दिया गया माल तथा कूड़ा करकट यहां तक कि कूडा करकट शिल्प कार्य के सबसे अच्छे संकेतकों में से एक है । उदाहरण के लिए ,यदि वस्तुओं के निर्माण के लिए शंख अथवा पत्थर को काटा जाता था तो इन पदार्थों के टुकडे कूडे के रूप में उत्पादन के स्थान पर फेंक दिए जाते थे । (V) पूर्ण वस्तुएं – कभी कभी बडे बेकार टुकडों को छोटे आकार की वस्तुएं बनाने के लिए प्रयोग किया जाता था । छोटे विशिष्ट केन्द्रों के अतिरिक्त मोहनजोदाडों तथा हड़प्पा जैसे बड़े शहरों में भी शिल्प उत्पादन किया जाता था । (किन्ही दो बिन्दुओं का परीक्षण) पृ.सं 11, 12	2
4	**सूफीवाद :** (I) विषय शक्ति के विरूद्ध कुछ आध्यात्मिक लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की और झुकाव बढा । (II)इन्होने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया । III)सूफियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवो के	4

www.careerindia.com

	आधार पर की । (IV)इन लोगों ने रूढिवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान की आलाचना की । (V)ग्यारहवी शताब्दी के आते आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था जिसका सूफी और कुरान से जुड़ा अपना साहित्य था । (I)सूफी अपने को एक संगठित समुदाय खानकाह के इर्द गिर्द स्थापित करते थे जिसका नियन्त्रण शेख ,पीर तथा मुर्शीद के हाथ में था । (VII)सूफी सिलसिला जो कि शेख और मुरीद के बीच की कड़ी था । (III)बारहवीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफी समुदायों में चिश्ती समुदाय सबसे अधिक प्रभावशाली रहे । (IX)सूफी मत के मुख्य उपदेशक शेख मुइनुद्दीन चिश्ती शेख निजामुद्दीन औलिया आदि थे । (X) सूफी दीक्षा लेने वाले को निष्ठा का वचन देना होता था ,और सिर मुडांकर थेगडी लगे वस्त्र धारण करने पडते थे । (XI) समुदाय रसोई फुतूह पर चलती थी । (XII) कव्वाली और जिक्र का प्रचलन था । (III)सूफी संतों की दरगाह पर की गई जियारत पर संत के आध्यात्मिक यानि बरकत की कामना की जाती थी । (IV) आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थ यात्री आने लगे । (XV) अन्य काई प्रासंगिक बिन्दु । किन्ह चार बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित पृ.सं 153	
5	**इब्न–बतूता तथा अनजाने को जानने की उत्कंठा** (I) बतूता के अनुसार दिल्ली एक बड़ा शहर ,विशाल आबादी	

www.careerindia.com

	वाला और भारत में सबसे बड़ा था । (II)शहर के चारों ओर बनी प्राचीर अतुलनीय है। दीवार की चौड़ाई ग्यारह हाथ है और इसके भीतर रात्री के पहरेदार तथा द्वारपालों के कक्ष हैं। (II) शहर के अठाईस द्वार हैं जिसमें बदायूं दरवाजा सबसे विशाल है,माड़वी दरवाजे के भीतर अनाज मंड़ी है गुल दरवाजे के बगल में फलों का बगीचा है । (IV) दिल्ली शहर मे एक बेहतरीन कब्रगाह है जिसके उपर गुंबद बनाई गयी है । (V)दिल्ली बडे क्षेत्र मे फैला घनी जनसंख्या वाला तथा समृद्ध क्षेत्र था । (VI) यहॉ भीड भाड वाली सडके तथा चमक–दमक वाले और रंगीन बाजार थे जो विविध प्रकार की वस्तुओं से भरे रहते थे। (VII) बाजार सामाजिक तथा आर्थिक गतिविधियों के केंद्र भी थे । अधिकांश बाजारों में एक मस्जिद तथा मंदिर होता था और उनमे से कम से कम कुछ में तो नर्तकों ,संगीतकारों तथा गायको के सार्वजनिक प्रदर्शन के स्थान भी चिह्त थे । (VIII)शहर अपनी संपत्ति का का एक बड़ा भाग गॉव से अधिशेष के अधिग्रहण से प्राप्त करते थे । (IX) बाजार में संगीत । (X) संसार की अनूठी प्रणाली (उल्लूक और दाबा) (XI) नारियल और पान । (किन्ही चार बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित) पृ.सं 126,127,128 स्रोत्र 8	4
6	**हिल स्टेशन औपनिवेशिक शहरी विकास का खास पहलु :**	

www.careerindia.com

	(I)हिल स्टेशनों की स्थापना और बसावट का सम्बन्ध ब्रिटिश सेना की जरूरतों से था जैसे – शिमला ,माउंटआबू और दार्जीलिंग । (II)ये हिल स्टेशन फौजियों को ठहराने ,सरहद की चौकसी करने और दुश्मनों के खिलाफ हमला बोलने के लिए महत्वपूर्ण स्थान थे । (III) पहाड़ो की मृदु और ठंडी जलवायु को फायदे की चीज माना जाता था । खासतौर से इसलिए की अंग्रेज गर्म मौसम को बीमारियां पैदा करने वाला मानते थे जैसे हैजा ,और मलेरिया की आशंका ज्यादा रहती थी । (IV)सेना की भारी भरकम मौजूदगी के कारण ये स्थान छावनी बन गए थे । (V) हिल स्टेशनों को सेनेटोरियम के रूप मे भी विकसित किया गया था जहॉ सिपाहियों को विश्राम और इलाज कराने के लिए भेजा जाता था । (VI) वायसराय अपने पूरे अमले के साथ हर साल गर्मियों में यहॉ ढेरा डाल लिया करते थे । (VII) नये शासकों को यहां की आबोहवा काफी सुहाती थी । (VIII) हिल स्टेशनों में यूरोपीय शैली की बस्तियां बसाना चाहते थे ।अलग– अलग मकानों के बाद एक दूसरे से कटे विला और बागों के बीच में कॉटेज बनाए जाते थे । (IX) सामाजिक दावत ,चाय बैठक , पिकनिक रात्री भेज, मेले , रेस और रंगमंच जैसी घटनाओं के रूप में यूरोपियों का सामाजिक जीवन भी एक खास किस्म था । (X) रेलवे के आने से ये पर्वतीय सैरगाहे बहुत तरह के लोगों की पहुच में आ गयी । (XI) हिल स्टेशन औपनिवेशिक अर्थव्यवथा के लिए भी महत्वपूर्ण थे ।पास के इलाकों मे चाय और कॉफी बागानों की	4

www.careerindia.com

	स्थापना से मैदानी इलाको से बडी संख्या मे मजदूर वहॉ आने लगे । (XII) कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु । (किन्हीं चार बिन्दुओं का व्याख्या अपेक्षित) पृ.सं 327 ,328	
7	**1857 के विद्रोह मे अवध के ताल्लुकदारो की भागेदारी** (I) अधिग्रहण के बाद ताल्लुकदारों की सत्ताएं भंग कर दी गई । (II) अवध के देहात में ताल्लुकदारों की जागीरें और किले बिखरे हुए थे पीढियों से यें लोग अपने इलाके में जमीन और सत्ता पर नियन्त्रण रखते थे । (III) अंग्रेज इन तालुकदारों की सत्ता बरदास्त करने को तैयार नहीं थे । (IV)अधिग्रहण के बाद ताल्लुकदारों की सेनाएं भंग कर दी गई और उनके दुर्ग ध्वस्त कर दिए गए । (V) अधिग्रहण के बाद एकमुस्त बन्दोबस्त से ब्रिटिश भूराजस्व व्यवस्था लागू कर दी गई । (VI) अंग्रेजों के आने से पहले ताल्लुकदारों के पास अवध के 67 प्रतिशत गॉव थे जो घट कर 38 प्रतिशत रह गए । (VII)दक्षिण अवध के ताल्लुकदारों को सबसे बुरी मार पडी जब आधे के ज्यादा गांव हाथ से जाते रहे । (VIII)ब्रिटिश भूराजस्व अधिकारियों का मानना था कि ताल्लुकदारों को हटा कर वे जमीन असली मालिकों के हाथ में सौंप देगें । (IX) अवध के इलाकों का मूल्य निर्धारण बहुत बढा चढा कर किया गया । (X) कुछ स्थनों पर तो राजस्व मॉग मे 30 से 70 प्रतिशत तक इजाफा हुआ जिससे न तो ताल्लुकदार और न ही	4

www.careerindia.com

	काश्तकार इससे खुश थे । (XI)ताल्लुकदारो की सत्ता छिनने से पूरी सामाजिक व्यवस्था भंग हो गई थी । (XII)अवध जैसे इलकों में 1857 के दौरान प्रतिरोध बेहद सधन और लंबा चला था क्योंकि बागडोर ताल्लुकदारों और किसानों के हाथ में थी । (XIII)बहुत सारे ताल्लुकदार अवध के नवाब के प्रति निष्ठा रखते थे और वे लखनउ जाकर बेगम हजरत महल के खेमे मे शामिल हो गए और कुछ तो बेगम की पराजय के बाद भी उनके साथ डटे रहे । (XIV) अन्य काई प्रासंगिक बिन्दु । किन्ह चार बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित । पृ.सं297, 299	
8	**600ई0पू0से 600 ई0 में ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियां:** (I) जातक और पंचतंत्र के अनुसार कुछ राजा की प्रजा किसी प्रकार से दुखी रहती थी तथा उनकी शिकायत थी कि रात में ड़कैत उन पर हमला करते हैं तो दिन में कर इकठ्ठा करने वाले अधिकारी । ऐसी परिस्थिति से बचने के लिए लोग अपने अपने गांव छोड़कर जंगल में बस गए । (II) उपज बढाने के अनेक तरीकों जैसे (अ)हल का प्रचलन,(ब)लाहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वरभूमि की जुताई ,(स)सिंचाई के माध्यम जैसे कुएं तालाब ,नहरों का उपयोग बढाया गया (III) ईसवी की आरभिक शताब्दियों से ही भूमि दान के प्रमाण मिलते हैं जैसे प्रभावती गुप्ता के अभिलेख । (IV) कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजा स्वयं को उत्कृष्ट स्तर के मानव के रूप में प्रदर्शित करना चाहते थे । (V) भूमिदान से दुर्बल हाते राजनीतिक प्रभुत्व,सामंतों पर	4

	दुर्बलता को दूर कर शक्ति का आड़म्बर प्रस्तुत करना चाहते थे । (VI) भूमिदान के प्रचलन से राज्य तथा किसानों के बीच संबंध की झांकी मिलती है । (VII) लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जिन पर अधिकारियों या सामंतों का नियन्त्रण नहीं था जैसे कि पशुपालक संग्रहक, शिकारी ,मछुआरे, शिल्पकार और झूम की खेती करने वाले लोग । (VIII) अन्य काई प्रासंगिक बिन्दु । (B) सामाजिक स्थिति : (I)खती से जुड़े लोगों में उत्तरोत्तर भेद बढता जा रहा था भूमिहीन खेतीहर श्रमिक, छोटे किसान और बड़े बड़े जमींदार । (II)बड़े –बड़े जमींदार और ग्राम प्रधान शक्तिशाली माने जाते थे जो प्रायः किसानों पर नियं़त्रण रखते थे । (III) आरम्भिक तमिल (संगम)साहित्य में भी गॉवों में रहने वाले विभिन्न वर्गों का उल्लेख है । बड़े जमींदार,हलवाहा या उल्लवर और दास अण्मिई । (IV) यह संभव है कि वर्गो की यह विभिन्नता स्वामित्व श्रम और नयी प्रौद्यौगिकी के उपयोग पर आधारित है । (V)गृहपति मुखिया होता था और घर मे रहने वाली महिलाओं, बच्चों ,नौकरों और दासों पर नियंत्रण करता था, वह भूमि ,जानवरों का मालिक होता था । (VI)कभी कभी इस शब्द का प्रयोग नगरों में रहने वाले संभ्रान्त व्यक्तियों और व्यापारियों के लिए भी होता था । (VII)महिलाओं का संपत्ति पर अधिकार । जाति/वर्ण पर आधरित बहुत से क्षेत्रों में लोगों का होना । (VIII) बौध साहित्य बताता है कि लोग जो विभिन्न जाति या	

www.careerindia.com

	वर्ण के थे वह धन और शक्ति का अर्जन कर लेते थे । (IX)पितृवंशशक्ति और बहु विवाह (X) अन्य काई प्रासंगिक बिन्दु । (किन्ही चार बिन्दुओं का परीक्षण अपेक्षित) पृ.सं38 ,39,40	
9	**हड़प्पाई समाज में जटिल फैसले लेने और उन्हे क्रियान्वित करने के संकेत मिलते हैं :** (I)मोहन जोदाडो में मिले एक विशाल भवन को एक प्रासाद की संज्ञा दी परन्तु इससे संबन्धित कोई भव्य वस्तु नहीं मिली हैं । (II)एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित राजा' की संज्ञा दी गई है और यह नाम आज भी प्रचलित है । (III)कुछ पुरातत्वविद् इस मत के हैं कि हडप्पा समाज में शासक नहीं थे तथा सभी की स्थिति समान थी । (IV) कुछ पुरातत्वविद् यह मानते है कि यहां कोई एक ही नहीं बल्कि कई शासक थे जैसे मोहनजोदाडों ,हडप्पा आदि के अपने अलग अलग राजा होते थे । (V)इतिहासकार यह भी तर्क देते हैं कि यह एक ही राज्य था जैसा कि पुरावस्तुओं में समानताओं , नियोजित बस्तियों के साक्ष्यों ईटों के आकार में निश्चित अनुपात तथा बस्तियों के कच्चे माल के स्रोतों के समीप संथापित होने से यह स्पष्ट है । (VI) अभी तक की स्थिति में अन्तिम परिकल्पना सबसे युक्तिसंगत प्रतीत होती है क्योंकि यह कदाचित सम्भव नही लगता कि पूरे के पूरे समुदायों द्वारा इक्ठ्ठे ऐसे जटिल निर्णय लिए और क्रियान्वित किये जाते होगे । (VII)हडप्पा पुरावस्तुओं मे आसाधरण एकरूपता मिलती है । (VIII) ईटें जिनका उत्पादन स्पष्ट रूप से किसी एक केद्र	4

www.careerindia.com

CAREERINDIA

	पर नहीं होता था ,जम्मू से गुजरात तक एक अनुपात में थी । (IX)ईंटे बनाने और विशाल दिवारों तथा चबूतरों के निर्माण के लिए श्रम संगठित किया गया था । (X) अन्य काई प्रासंगिक बिन्दु । किन्ही चार बिन्दुओं का परीक्षण अपेक्षित पृ.सं 16, 17	
10	**गांधीजी द्वारा दर्शाए गए मूल्य** (I) आम इंसान के लिए प्रेम और आदर । (II)आपसी सद्भाव (III) उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ईमानदारी (IV) देश प्रेम (V) सदाचार । (VI)सत्याग्रह । (VII)सहिष्णुता (VIII) अहिंसा (IX)परानुभुति (X)साप्रदायिक सदभाव । (XI) समानता (XII)विश्वसनीयता (XIII)स्वदेशी सामानों को बढावा (XIV) कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु । (किन्हीं चार बिन्दुओं का परीक्षण अपेक्षित) पृ.सं 351 ,	4

www.careerindia.com

CAREERINDIA

11	**20वीं षताब्दी के प्रारंभिक दशकों में साप्रंदायिक अस्मिताएं।** (i) पृथक चुनाव – भारत सरकार अधिनियम – 1909, 1919 और 1935 (II) राजनीतिक व्यवस्था में धार्मिक अस्मिताओं का क्रियाशील प्रयोग । (iii) संप्रदाय अस्मिताओं का अत्यधिक बल (iv) 'मस्जिद के सामने संगीत' से मुसलमानों में रोश और गो–रक्षा आंदोलन (v) आर्यसमाज का हिंदू सुधार आंदोलन (vi) मुसलमानों में तबलींग और तंज़ीम का विस्तार (vii) हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग में दरार (viii) 1937 में प्रांतीय चुनाव (ix) क्रिप्स मिषन (x) 'पाकिस्तान का प्रस्ताव' मुस्लिम लीग द्वारा (1946) (xi) जिन्ना की पाकिस्तान की मांग (xii) केबीनेट मिषन और ढीले–ढाले त्रिस्तरीय महासंघ का सुझाव 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' (xiii) सांप्रदायिक तनाव व दंगे (xiv) अन्य कोई प्रासांगिक बिंदु (पूर्णरूप से मूल्यांकन) पृ0 सं0 389 **अथवा** **पृथक निर्वाचिका के विचार का विरोध** (i)राष्ट्रवादी नेता पृथक निर्वाचिका के प्रस्ताव पर भड़कने लगे। उन्हें गृहयुद्ध, दंगों और हिंसा की आषंका दिखाई देती	4+4

www.careerindia.com

CAREERINDIA

	थी। (ii)बी. पोकर बहादुर ने पृथक निर्वाचिका बनाए रखन के पक्षमें थे। (iii)पृथक निर्वाचिका के विचार ने संविधान सभा के राश्ट्रवादियों में गुस्सा और निराषा पैदा की। (iv)अंग्रेजों ने इस संरक्षण के नाम पर अपना खेल खेला (v)इस मांग ने एक समुदाय को दूसरे के विरूद्ध कर दिया (vi)संप्रदायिक स्तर पर स विचारधारा ने लोगों को बाँट दिया राष्ट्र के टुकड़े कर दिए, रक्तपात को जन्म दिया और देष के विभजन का कारण बनी। (vii) यह राष्ट्र की एकता को नुकसान पहुंचाने वाली व्यवस्था थी। (viii)यह लोकतंत्र के सिद्धांत के विरूद्ध थी। (ix)जी. बी. पंत ने इसे अल्पसंख्यको के लिए आत्मघाती माना। (x)राजनीतिक एकता और राश्ट्र की स्थापना करने के लिए हर समूह को राश्ट्र के भीतर रामहित किया जाना था। (xi)पृथक निर्वाचकि से निश्ठाएँ खंडित होगी और एक षक्तिषाली राश्ट्र राज्य की स्थापना नहीं हो पाएगी। (xii)अल्पसंख्यकों के अलगांव से उनकी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में संक्रिय भूमिका कम हो जाएगी। (xiii)अन्य कोई प्रांसागिक बिंदू (पूर्ण रूप से मूल्यांकन) पृ0सं0 416 ,420	

www.careerindia.com

12.	**बौद्ध धर्म का विकास ।** (I)बुद्ध के जीवन काल में और उनकी मृत्यु के बाद भी बौद्ध धर्म तेजी के साथ फैला । (II)इसका कारण यह था कि लोग समकालीन धर्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे और तेजी से हो रहे सामाजिक बदलावों ने उलझने मे बाध रखा था । (III) अच्छे आचरण और मूल्यों को महत्व दिया गया न कि जन्म के आधार पर श्रेष्ठता को । खुद से छोटे और कमजोर लोगों की तरफ मित्रता और करूणा को महत्व देने के आर्दश काफी लोगों को भाए । (IV) बौद्ध धर्म का विकास बौद्धिक साहित्य से भी हुआ जैसे त्रिपिटक (विनय पिटक,अधिधम्म पिटक ,सुत्त पिटक),दीपवंश और महावंश, अशोकवदान, जातक और अन्य बौद्धिक साहित्य । (V)बौद्धिक संघ,भिक्खु ,भिक्खनी का बुद्ध के संदेश का प्रचार । (VI) स्तूप (VII) अशोक के अभिलेख (VIII) धम्म–महामात्त (IX)हीनयान और महायान परंपराए	

www.careerindia.com

	(X) राजाओं का सर्मथन (XI) विदेशी तीर्थ यात्री (XII) कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु । (किन्हीं चार बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित) **बौद्ध धर्म की शिक्षाएं :** (I)विश्व अनित्य है और लगातार बदल रहा है (II)यह आत्म विहिन(आत्मा)है क्योंकि यहॉ कुछ भी स्थाई या शाश्वत नहीं है । (III)दुख मनुष्य के जीवन का अतंर्निहित तत्व है । (IV)घोर तपस्या और विषयाशक्ति के बीच मध्य मार्गअपनाकर मनुष्य दुनिया के दुखों से मुक्ति पा सकता है । (V)भगवान का होना या न होना अप्रासंगिक है । (V)राजाओं और गृहपतियों को दयावान और आचारवान होने की सलाह दी । (VII)व्यक्ति केद्रित हस्तक्षेप और कर्म की कल्पना की ।	

www.careerindia.com

	(VII)निर्वाण के लिए अहं और इच्दा का खत्म हो जाना ताकि दुख के चक्र का अंत हो सके । (VIII) कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु । (किन्हीं चार बिन्दुओं का स्पष्टीकरण) पृ.सं 83, 96, 98 अथवा स्तूप कैसे बनाए गए : (I)इन्हे पवित्र माना जाता था ,यहॉ बुद्ध से जुडेकुछ अवशेष जैसे उनकी अस्थियॉ या उनके द्वारा प्रयुक्त सामान गाड दिए गए थे । (II) अशोकवदान ग्रन्थ के अनुसार अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से हर महत्तवपूर्ण शहर में बॉट कर उनके उपर स्तूप बनाने का आदेश दिया । (III)दूसरी शताब्दि ई0 तक भरहुत साची और सारनाथ का निर्माण हो चुका था । (IV) कुछ दान राजाओंके द्वारा दिए गए थे (जैसे सातवाहन वंशके राजा) । (V)शिल्पकारों द्वारा दिया गया दान (तारण द्वार) (VI) सैकडो महिलाओं और पुरूषो ने दान के अभिलेखो में अपना नाम बताया है और कभी कभी रिस्तेदारों और अपना	

www.careerindia.com

CAREERINDIA

पेशा भी बताया है

(VII) इनमें भिक्षु और भिक्षुणियों ने भी दान दिया

(VIII) कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु ।

(किन्हीं चार बिन्दुओं का व्याख्या अपेक्षित)

पृ0 सं0 83,96,98

साची क्यों बच गया जब्कि अमरावती नष्ट हो गया :

(I)भोपाल के शासको शॉहजहा बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तानजहॉ बेगम नइस प्राचीन स्थल के रखरखव के लिऐ धन का अनुदान दिया ।

(II)संग्रालय के लिए दान दिया ।

(III) अतिथिशालाबनाने के लिए दान दिया जहा रहते हुए जॉन मार्शल ने पुस्तकें लिखी

(IV)इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए भी अनुदान दिया

(V) स्तूप पर किसी रेल ठकेदार या निर्माता की नजर नहीं पडी ,यह उन लोगो से भी बचा रहा जो ऐसी चीजो को यूरोप के संग्रहलयों में ले जाना चाहते थे

(VI) अंग्रेज और फ्रेंच इसके असली तोरण द्वार लेने के बजाए प्लास्टर प्रतिकृतियॉ ले गए ।

(VII) एच0एच0कोल इन प्राचीन कलाकृति कीलूट को

www.careerindia.com

	आत्मघाती तथा असर्थनीय मानते थे । (VIII) उन्नीसवीं सदी के यूरोपियों को साची में काफी रूची थी । **अमरावती नष्ट क्यो हो गया** i. अमरावती की खोज थोड़ी पहले हो गई थी तब तक विद्वान इसका महत्व नहीं समझ पाए थे। ii. वॉरन एलियट मूर्तियों और उत्कीण पत्थरों को मद्रास ले गया। iii. 1850 के दशक में अमरावती के उत्कीण पत्थर अलग अलग जगहों पर ले जाए जा रहे थे। कुछ पत्थर कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसाईटी ऑफ बंगाल' पहुंचे तो कुछ मद्रास में 'इंडिया आफिस'। iv. अंग्रेज अधिकारियों के लोगों में अमरावती की मूर्तियां पाना कोई असामान्य बात नहीं थी। v. कुछ स्थानीय राजाओं ने भी अमरावती के स्तूप के अवशेषों पर मंदिर बनवा दिए। vi. कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु। (संपूर्णरूप से परीक्षण) पृ0सं 83, 96,98	

www.careerindia.com

13	**भारत में मुगल शासकों के द्वारा अभिजात वर्ग में विभिन्न नृ–जातिय तथा धार्मिक समूहों से होती थी।** i. अभिजात वर्ग में नृ–जातिय और धार्मिक समूहों की भर्ती होती थी। ii. इससे यह सुनिश्चित किया जाता था कि कोई भी दल इतना बड़ा न हो कि वह राज्य की सत्ता को चुनौती दे सके। iii. मुगलों के अधिकारी वर्ग को गुलदस्ते के रूप में वर्णित किया जाता था जो वफादारी से बादशाह के साथ जुड़े हुए थे। iv. अकबर की शाही सेवा में तुरानी और ईरानी अभिजात वर्ग हुमांयू के समय से ही चले आ रहे थे। v. कुछ अन्य बाद में मुगल दरबार में आये थे। vi. समाजों से विभिन्न समूहों और श्रेणियों के लोग शाही दरबार में आश्रय प्राप्त करते थे। vii. ज्ञान और निपुण व्यक्तियों के साथ–साथ योद्धाओं की भी अभिजात वर्ग में भर्ती की जाती थी। viii. राजपूतों और भारतीय मुसलमानों ने शाही सेना में	8

www.careerindia.com

CAREERINDIA

		अकबर के समय में प्रवेश लिया।	
	ix.	जहांगीर के शासन में ईरानियों को उच्च पद प्राप्त हुए।	
	x.	औरंगजेब ने राजपूतों को उच्च पद पर नियुक्त किया।	
	xi.	राजपूत कबिलों के साथ मुगल शादी भी राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने और गठबंधन बनाने का तरीका थी।	
	xii.	शासन में अधिकारियों के समूह में मराठे अच्छी खासी संख्या में थे।	
	iii.	सुलह–ए–कुल के आदर्श को प्रबुद्ध शासन की आधारशिला बनाया गया।	
	iv.	अभिजात वर्ग मिश्रित किश्म का था अर्थात् उसमें ईरानी, तुरानी, अफगानी, राजपूत सभी शामिल थे।	
	xv.	सेन्य अभियानो में ये अभिजात अपनी सेनाओं के साथ भाग लेते थे तथा प्रांतों में साम्राज्य के अधिकारियों के रूप में भी कार्य करते थे।	
	vi.	अभिजात मुगल शासकों के मनसबदार भी थे।	
	vii.	सभी सरकारी अधिकारियों के दर्जे और पदों में दो तरह के संख्या विषयक ओहदे थे , जात और सवार।	
	iii.	अभिजात वर्ग के लिए शाही सेवा शक्ति, धन तथा उच्चतम प्रतिष्ठा प्राप्त करने का जरिया थी जैसे मीर बख्शी, दीवाने आला और सद्र–उस–सुदुर।	
	ix.	शिक्षा और लेखाशास्त्र की ओर झुकाव वाले हिन्दु जातियों के सदस्यों को पदोन्नत किया जाता था	

www.careerindia.com

CAREERINDIA

	उदाहरण—टोडरमल। xx. कोई अन्य प्रसांगिक बिन्दु। **अथवा** **मुगल सम्राज्य में शाही परिवार की स्त्रियों द्वारा निभाई गई भूमिका—** i. मुगल परिवार में बादशाह की पत्नियां, उपपत्नियां, रिश्तेदार, महिला परिचारिकाएं तथा गुलाम होते थे। ii. हरम का प्रयोग मुगलों की घरेलू दुनिया की ओर संकेत देता है जिसका अर्थ होता है पवित्र स्थान। iii. बहु विवाह प्रथा का प्रचलन था। iv. विवाह में पुत्री को भेंट स्वरूप प्रायः एक क्षेत्र भी उपहार में दिया जाता था। v. शासक वर्ग के बीच पदानुक्रमिक संबंधों की निरन्तरता सुनिश्चित हो जाती थी। vi. मुगल परिवार में शाही परिवारों से आने वाली स्त्रियां (बेगमों) और अन्य स्त्रियों (अगहा) में अन्तर रखा जाता था। vii. दहेज (महर) के रूप में अच्छा खासा नकद और बहुमूल्य वस्तुएं उंचा दर्जा और सम्मान की बात होती थी। viii. सभी को नकद मासिक भत्ता तथा उपहार मिलते थे। ix. उपपत्नियों (अगाया) की स्थिति सबसे निम्न थी। x. वंश आधारित पारिवारिक ढ़ांचा पूरी तरह स्थायी नहीं	

www.careerindia.com

CAREERINDIA

		था।	
	xi.	प्रेम और मातृत्व के आधार पर अगाह और अगाया भी बेगम की स्थिति पा सकती थी।	
	xii.	पत्नियों के अतिरिक्त परिवार में अनेक महिला और पुरूष गुलाम होते थे।	
	iii.	गुलाम हिजड़े (ख्वाजासर) परिवार के अन्दर और बाहर के जीवन में रक्षक नौकर और व्यापार में दिलचस्पी लेने वाली महिलाओं के एजेंट होते थे।	
	iv.	नूरजहां के बाद मुगल रानियों और राजकुमारियों ने महत्वपूर्ण वित्तिय स्रोतों पर नियंत्रण रखना शुरू कर दिया।	
	xv.	शाहजहां की पुत्रियां जहांआरा और रौशनआरा को उंचे शाही मनसबदारों के समान वार्षिक आय होती थी।	
	vi.	जहांआरा को सूरत के बंदरगाह नगर से विदेशी व्यापार से राजस्व प्राप्त होता था।	
	vii.	संसाधनों पर नियंत्रण में मुगल परिवार की महत्वपूर्ण स्त्रियों को ईमारतों व बागों के निर्माण का अवसर दे दिया था।	
	iii.	शाही परिवार पर गुलबदन ने हुमांयूनामा लिखा है ।	
	ix.	जहांआरा ने शाहजहां की दिल्ली, चांदनी चौक की रूपरेखा तैयार की थी।	
	xx.	कोई अन्य प्रासांगिक बिन्दु।	
		(संपूर्णरूप से परीक्षण)	

www.careerindia.com

पृ0 सं0 242, 243**20वीं षताब्दी के प्रारंभिक दशकों में साप्रंदायिक अस्मिताएं।**

(i) पृथक चुनाव – भारत सरकार अधिनियम – 1909, 1919 और 1935

(II) राजनीतिक व्यवस्था में धार्मिक अस्मिताओं का क्रियाशील प्रयोग ।

(iii) संप्रदाय अस्मिताओं का अत्यधिक बल

(iv) 'मस्जिद के सामने संगीत' से मुसलमानों में रोश और गो–रक्षा आंदोलन

(v) आर्यसमाज का हिंदू सुधार आंदोलन

(vi) मुसलमानों में तबलींग और तंज़ीम का विस्तार

(vii) हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग में दरार

(viii) 1937 में प्रांतीय चुनाव

(ix) क्रिप्स मिषन

(x) 'पाकिस्तान का प्रस्ताव' मुस्लिम लीग द्वारा (1946)

(xi) जिन्ना की पाकिस्तान की मांग

(xii) केबीनेट मिषन और ढीले–ढाले त्रिस्तरीय महासंघ का सुझाव

'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस'

(xiii) सांप्रदायिक तनाव व दंगे

(xiv) अन्य कोई प्रासांगिक बिंदु

(पूर्णरूप से मूल्यांकन)

पृ0 सं0 389

अथवा

पृथक निर्वाचिका के विचार का विरोध

(i)राष्ट्रवादी नेता पृथक निर्वाचिका के प्रस्ताव पर भड़कने

www.careerindia.com

	लगे। उन्हें गृहयुद्ध, दंगों और हिंसा की आषंका दिखाई देती थी। (ii)बी. पोकर बहादुर ने पृथक निर्वाचिका बनाए रखन के पक्षमें थे। (iii)पृथक निर्वाचिका के विचार ने संविधान सभा के राश्ट्रवादियों में गुस्सा और निराषा पैदा की। (iv)अंग्रेजों ने इस संरक्षण के नाम पर अपना खेल खेला (v)इस मांग ने एक समुदाय को दूसरे के विरूद्ध कर दिया (vi)संप्रदायिक स्तर पर स विचारधारा ने लोगों को बाँट दिया राष्ट्र के टुकड़े कर दिए, रक्तपात को जन्म दिया और देष के विभजन का कारण बनी। (vii) यह राष्ट्र की एकता को नुकसान पहुंचाने वाली व्यवस्था थी। (viii)यह लोकतंत्र के सिद्धांत के विरूद्ध थी। (ix)जी. बी. पंत ने इसे अल्पसंख्यको के लिए आत्मघाती माना। (x)राजनीतिक एकता और राश्ट्र की स्थापना करने के लिए हर समूह को राश्ट्र के भीतर रामहित किया जाना था। (xi)पृथक निर्वाचकिा से निश्ठाएँ खंडित होगी और एक षक्तिषाली राश्ट्र राज्य की स्थापना नहीं हो पाएगी। (xii)अल्पसंख्यकों के अलगांव से उनकी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में संक्रिय भूमिका कम हो जाएगी। (xiii)अन्य कोई प्रांसागिक बिंदू (पूर्ण रूप से मूल्यांकन) पृ0सं0 416 ,420	
14	14.1 **कॉलिन मैकेन्जी कौन था** (i)कॉलिन मैकेन्जी ईस्ट इंडिया कम्पनी का भारत में एक अभियंता, सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार था।	

www.careerindia.com

CAREERINDIA

	(ii)1815 में उन्हें भारत का पहला सर्वेयर जनरल बनाया गया। 14.2 **मैकेन्जी ने विजयनगर साम्राज्य की खोज किस प्रकार की** (i)उसने स्थानीय लोगों का इतिहास इकट्ठा किया (ii)स्थानीय परंपराओं का संकलन किया। (iii)ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण किया (iv) भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने और उपनिवेश के प्रषासन को आसान बनाने के लिए उन्होंने इतिहास से संबंधित स्थानीय परंपराओं का संकलन किया। (v)उन्होंने कहा ब्रिटिष प्रषासन के सुप्रभाव में आने से पहले दक्षिण भारत खराब प्रबंधन की दुर्गति से लम्बे समय तक जूझता रहा। 14.3 **विजयनगर साम्राज्य की जानकारी ईस्ट इंडिया कम्पनी के लिए किस प्रकार लाभप्रद थी।** (i)मैकेन्जी का मानना था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी को विजयनगर की महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती थी जैसे : 1. संस्थाओं 2. कानूनों 3. रीति रिवाजों के विषय (ii) इन सबका प्रभाव अब भी जनसंख्या को प्रभावित कर रहा था। पृ0 सं 171,	
15	15.1 **दाण्डी मार्च षुरू करने से पहले गांधीजी को क्या आशंकाए थी** (i)गांधीजी को आंषका थी की उन्हें दाण्डी नहीं पहुंचने दिया जाएगा (ii)उन्हें लगता था कि सरकार उनके साथियों को तो दाण्डी पहुंचने देगी पर उनको नहीं। (iii)उन्हें रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। 15.2 **गांधीजी ने यह क्यों कहां – 'सरकार को बधाई दी**	3+3+2

www.careerindia.com

CAREERINDIA

	जानी चाहिए' (i)सरकार ने धैर्य और सहनशीलता को प्रदर्शित किया और दाण्डी पहुंचने की अनुमति दी। (ii)गांधीजी ने कहां की सरकार को हमें गिरफ्तार न करने के लिए बधाई दी जानी चाहिए भले ही उसने विश्व जनमत का ख्याल करके ही यह फैसला क्यों न लिया हो। 15.3 **नमक मार्च महत्वपूर्ण क्यों था** (i)इसके चलते महात्मा गांधी दुनियां की नजर में आए। (ii)इसमें औरतों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया (iii)अंग्रेजो को यह अहसास हुआ था कि अब उनका राज बहुत दिन तक नहीं टिक सकेगा। (iv)इस आंदोलन में पूरे राश्ट्र को जागरूक किया और इस पूरा राष्ट्र अंग्रेजो के विरूद्ध खड़ हो गया।	
16	**द्रोण ने एकलव्य को अपना शिष्य के रूप में स्वीकार करने से मना क्यों किया** (i)एकलव्य एक बनवासी निशाद था। (ii)द्रोण (ब्राह्म) धर्म का समझते थे और इसलिए उन्होंने धर्म का पालन करने के लिए उसे इंकार कर दिया क्योंकि वह निम्न जाति अर्थात निशाद था। (iii) द्रोण ने अपने प्रिय षिश्य अर्जुन को सभी षिश्यों में अद्बितीय तीरदांज बनाने का वादा किया हुआ था। 16.2 **द्रोण ने अर्जुन को दिए वचन को किस प्रकार निभाया** (i)द्रोण एकलव्य के पास गए जिसने उन्हें अपना गुरू मानकर प्रणाम किया। (ii)द्रोण ने गुरू दक्षिण के रूप में एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांग लिया। एकलव्य ने फौरन उन्हें अंगूठा काट कर दे दिया।	1+1+ 3

www.careerindia.com

CAREERINDIA

	(iii)अब एकलव्य तीर चलाने में उतना तेज नहीं रहा। इस तरह द्रोण ने अर्जुन को दिए वचन को निभाया। 16.3 **क्या द्रोण का व्यवहार एकलव्य के लिए न्याय संगत था,?** (यह एक खुला प्रश्न है छात्र को अपने तर्किक तर्क और समझने के लिए उचित महत्व दिया जाना चाहिए। (i)नहीं, यह न्यायसंगत नहीं था। उनका व्यवहार अर्जुन की तरफ पक्षपातपूर्ण था। **अथवा** हांजी, द्रोण अपना धर्म जानते थे। वैसे वो ब्राहण थे और शाही परिवार के गुरू भी थे तो वह निम्नजाति वर्ग को अपना शिष्य नहीं बना सकते थे। धर्म सूत्रों और धर्मशास्त्रों में चार वर्गो के लिए आदंर्श जीविका के नियम बनाए गए थे। ब्राहम्णो का कार्य अध्ययन, वेदों की शिक्षा करवाना था शूद्रों के लिए मात्र एक ही जीविका थी – तीनों 'उच्च' वर्गो की सेवा करना।	
17	**दृष्टि बाधित छात्रों के लिए** 17.1 अमृतसर / चौरी–चौरा / चम्पारन / खेड़ा / बम्बई / कलकत्ता / अहमदाबाद / दाण्डी / मद्रास / दिल्ली / बनारस / लाहौर / बारदौली / कराची (काई एक) आगरा / अम्बेर / अजमेर / गोआ / पानीपत / दिल्ली / लाहौर (कोई एक) अजंता / नासिक / बोधगया / (कोई तीन बौद्धिक स्थल पेज 95)	2+3

www.careerindia.com

CAREERINDIA

	संलग्न मानचित्र देखिए